आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received: 20/06/2024; Published: 26/06/2024

कविता

आ सको आओ

- प्रतिभा मुदलियार

इंतज़ार नहीं है
तुम्हारा
पर
आ सको तो आओ।
पता है
धूप पसंद नहीं है
तुम्हें
घबराता है दिल
तुम्हारा
जब
पेशानी पर ऊभर
आता है पसीना।
इन दिनों मेरे शहर में
बारिश अपनी
हाज़िरी लगा रही है
दे रही है
सुकून सबको
धूप में दहकता
गुलमोहर
कुछ ज़्यादा ही
खिला है
आ सको तो आओ।
पता है

भीड़ पसंद है
तुम्हें
सड़क पर गुज़रती कारें
लोगों की आवाजाही
शोर भी
ये सब
जीवंतता का एहसास कराते हैं
पर कभी कभार
भीड़ का ख़ाली कोना
तलाशते हो तुम
मेरी बग़ल का वह कोना
ख़ाली है आज भी
आ सको तो आओ
कुछ बतियाते हैं
या रह लेते है चुप ही
अब शब्दों की कहाँ
होती है ज़रूरत?
बस मौन हो लेते हैं
शब्दहीन।
फिर चल पड़ते हैं
अपनी अपनी चुनी
राह पर।
आ सको तो आओ।

****